आते हैं। उसका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एककें प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहाँ बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव प्राप्त होते हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहाँ जो संख्यात अंक लब्ध आवें उनका विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहाँ एक खंडप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहाँ जो असंख्यात लोक लब्ध आवें उन्हें विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहाँ एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय जीव होते हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे सर्व जीवराशिके भाजित करने पर वहाँ जो असंख्यात लोकप्रमाण राशि लब्ध आवे उसे विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व जीवराशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर वहाँ एक विरलनके प्रति जितना प्रमाण प्राप्त हो उतने बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव होते हैं। इसीप्रकार बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तोंका भी कथन करना चाहिये और यही निरुक्ति है, क्योंकि, यहाँ पर कारणसे निरुक्तिमें भेद नहीं पाया जाता है।

द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात हैं ।।७७।।

बहूणं वीइंदियादीणं तस्सेवेत्ति एगवयणणिद्देसो कधं घडदे? ण एस दोसो, बहूणं पि जादीए एयत्तविरोहाभावादो। एत्थ अपज्जत्तवयणेण अपज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा। अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं पि अपज्जत्तवयणेण गहणप्पसंगादो। एवं पज्जत्ता इदि वुत्ते पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदजीवा घेत्तव्वा। अण्णहा पज्जत्तणामकम्मोदयसहिदणिव्वत्तिअपज्जत्ताणं गहणाणुववत्तीदो। वि-ति-चउरिंदिए त्ति वुत्ते वीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादिणाम-कम्मोदयसहिदजीवाणं गहणं । वेण्णि इंदियाणि जेसिं ते वेइंदिया इदि घेप्पमाणे को दोसो ? चे ण, अपज्जत्तकाले वट्टमाणजीवाणमिंदियाभावेण तेसिमगहणप्पसंगादो । खओवसमो इंदियं ण दव्विंदियमिंदियमिदि चे ण, सजोगिकेवलिस्स पणट्ठखओवसमस्स अणिंदियत्तप्पसंगादो। होदु? चे ण, सुत्तेतस्स पंचिंदियत्तपदुप्पायणादो । कम्हि

तं सुत्तमिदि चे एत्थेव । तं जहा- पंचिंदिया सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति दव्वपमाणेण केवडिया, ओघमिदि ।

शंका -- द्वीन्द्रियादिक जीव बहुत हैं, अतएव उनके लिये 'तस्सेव' इसप्रकार एक वचन निर्देश कैसे बन सकता है ?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, बहुतके भी जातिसे एकत्वके प्रति कोई विरोध नहीं आता है।

यहाँ सूत्रमें अपर्याप्त पदसे अपर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये । अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे उक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका भी अपर्याप्त इस वचनसे ग्रहण प्राप्त हो जायेगा। इसीप्रकार पर्याप्त ऐसा कहने पर पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये। अन्यथा पर्याप्त नामकर्मके उदयसे युक्त निर्वृत्यपर्याप्त जीवोंका ग्रहण नहीं होगा। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय ऐसा कहने पर द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंका ग्रहण करना चाहिये।

शंका -- 'जिन जीवोंके दो इन्द्रियां पाई जाती हैं वे द्वीन्द्रिय जीव हैं' ऐसा ग्रहण करनेमें क्या दोष आता है ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, उपर्युक्त अर्थके ग्रहण करने पर अपर्याप्त कालमें विद्यमान जीवोंके इन्द्रियां नहीं पाई जानेसे उनके नहीं ग्रहण होनेका प्रसंग प्राप्त हो जायेगा ।

शंका -- क्षयोपशमको इन्द्रिय कहते हैं, द्रव्येन्द्रियको इन्द्रिय नहीं कहते हैं; इसलिये अपर्याप्त कालमें द्रव्येन्द्रियोंके नहीं रहनेपर भी द्वीन्द्रियादि पदोंके द्वारा उन जीवोंका ग्रहण हो जायेगा?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, यदि इन्द्रियका अर्थ क्षयोपशम किया जाय तो जिनका क्षयोपशम नष्ट हो गया है ऐसे सयोगिकेवलीको अनिन्द्रियपनेका प्रसंग आ जाता है।

शंका -- आ जाने दो ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, सूत्रमें सयोगिकेवलीको पंचेन्द्रिय कहा है।

सुहुमत्थपरूवणट्ठं सुत्तमाह-

असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।।७८।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे। एदाओ रासीओ सव्वकालमायाणुरूववयसहिदाओ त्ति ण वोच्छेदमुवढुक्कंते तदो असंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति त्ति कधमेदं घडदे ? सच्चं, ण वोच्छिज्जंति चेव किंतु एदासिमाएण विणा जदि वओ चेव भवदि तो णिच्छएण वोच्छिज्जंति। अण्णहा असंखेज्जत्ताणुववत्तादो। एदस्सत्थस्स अवबोहणट्ठं अवहिरंति त्ति वुत्तं।

शंका -- वह सूत्र कहाँ पर है ?

समाधान -- यहीं आगे है । यथा- 'पंचेन्द्रिय जीव सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं ? सामान्य प्ररूपणाके समान पांचवें गुणस्थानतक पल्योपमके असंख्यातवें भाग और छठवेंसे संख्यात हैं।

अब सूक्ष्म अर्थका प्ररूपण करनेके लिये सूत्र कहते हैं-

कालकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीव असंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होते हैं ।।७८।।

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

शंका -- ये द्वीन्द्रियादि सर्व जीवराशियां सर्व काल आयके अनुरूप व्ययसे युक्त हैं, इसलिये यदि विच्छेदको प्राप्त नहीं होती हैं तो 'असंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंके द्वारा अपहृत होती हैं', यह कथन कैसे घटित हो सकता है ?

समाधान -- यह सत्य है कि पूर्वोक्त द्वीन्द्रियादिक जीवराशियां विच्छिन्न नहीं होती हैं, किन्तु इन राशियोंका आयके विना यदि व्यय ही होता तो निश्चयसे विच्छिन्न हो जाती । यदि ऐसा न माना जाय तो 'द्वीन्द्रियादि राशियां असंख्यात हैं' यह कथन नहीं बन सकता है। इसी अर्थका ज्ञान करानेके लिये 'अवहिरंति' ऐसा कहा ।

विशेषार्थ -- यहाँ सूत्रमें 'असंखेज्जाहि' पाठ है, किन्तु अर्थसंदर्भकी दृष्टिसे वहाँ 'असंखेज्जासंखेज्जाहि' ऐसा पाठ प्रतीत होता है। खुद्दाबंध खंडके इसी प्रकरणमें इन्हीं जीवोंकी

सामान्य संख्या बतलाते हुए यह सूत्र पाया जाता है- ‘असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण।’ किन्तु यहाँ टीकामें भी ‘असंखेज्जाहि’ पद होनेसे उसी पाठकी रक्षा की गई।

खेत्तेण वेइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदिय तस्सेव पज्जत्त-अपज्जत्तेहि पदरमवहिरदि. अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण१ (द्वीन्द्रियास्त्रीन्द्रियाश्चतुरिन्द्रिया असंख्येया: श्रेणय: प्रतरासंख्येयभागप्रमिता:, स.सि. १, ८. पज्जत्तापज्जत्ता वितिचउ x x अवहरंति । अंगुलसंख x x पएसमइयं पुढो पयरं ।। पञ्चसं. २, १२.) ।। ७९ ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे । तं जहा- ‘जहा उद्देसो तहा णिद्देसो’ त्ति णायादो पुव्वुद्दिट्ठवि-ति-चउरिंदियाणं पमाणं पुव्वुद्दिट्ठमेव भवदि । मज्झिल्लं मज्झम्हि समुद्दिट्ठपज्जत्ताणं भवदि । अंतिल्लं पि अंतुद्दिट्ठं तेसिमपज्जत्ताणं हवदि । एदेहि सामण्णविगलिंदिएहि तेसिं चेव पज्जत्तएहि विगलिंदियअपज्जत्तएहिय जगपदरमवहिरदि । अंगुलस्स सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागो सूचिअंगुलमावलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयभागो । तस्स वग्गो तारिसेण अवरेण गुणिदरासी पडिभागो अवहारकालो । एवं चेव अपज्जत्तसुत्तं पि विवरेयव्वं । एवं चेव पज्जत्तसुत्तं पि वक्खाणेयव्वं । णवरि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभाए वग्गिदे पज्जत्ताणमवहारकालो

क्षेत्रकी अपेक्षा द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरू प प्रतिभागसे जगत्प्रतर अपहृत होता है । तथा उन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके द्वारा क्रमश: सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरू प प्रतिभागसे जगत्प्रतर अपहृत होता है।।७९।।

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं । वह इसप्रकार है- ‘उद्देशके अनुसार निर्देश किया जाता है’ इस न्यायके अनुसार पहले कहा गया द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण पहले कहा ही गया है । मध्यमें कह गये पर्याप्तोंका प्रमाण मध्यमें कहा गया है और अन्तमें कहा गया प्रमाण भी अन्तमें कहे गये उन्हींके अपर्याप्तकोंका है। इनके द्वारा अर्थात् सामान्य विकलत्रयोंके

द्वारा, उन्हींके पर्याप्तकोंके द्वारा और विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके द्वारा जगत्प्रतर अपहृत होता है । यहाँ पर अंगुलसे तात्पर्य सूच्यंगुलका और उसके असंख्यातवें भागसे तात्पर्य सूच्यंगुलको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे उससे है । उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग इसका यह तात्पर्य हुआ कि उस सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागको तत्प्रमाण दूसरी राशिसे गुणित कर दो । ऐसा करने पर जो राशि उत्पन्न होगी वह यहाँ पर प्रतिभाग अर्थात् अवहारकाल है। इसीप्रकार अपर्याप्त सूत्रका भी स्पष्टीकरण करना चाहिये और इसीप्रकार पर्याप्त-सूत्रका भी व्याख्यान करना चाहिये । इतना विशेष है कि सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गित करने पर पर्याप्तोंका अवहारकाल होता है । इस प्रतिभागसे ।

होदि । तेण पडिभाएण । पदरंगुलस्स असंखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियविगलिंदियअपज्जत्तेहिय जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि । पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागं सलागभूदं ठविय विगलिंदियपज्जत्तेहि जगपदरे अवहिरिज्जमाणे सलागाहि सह जगपदरं समप्पदि त्ति जं वुत्तं होदि ।

पंचिंदिय-पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठी दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा१ (x x मणुस्सादिगा सभेदा जे । जुगवारमसंखेज्जा ।। गो.जी. १७५.) ।। ८० ।।

एदस्स सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।। ८१ ।।

एदस्स वि सुत्तस्स अत्थो सुगमो त्ति ण वुच्चदे ।

खेत्तेण पंचिंदिय पंचिंदियपज्जत्तएसु मिच्छाइट्ठीहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण अंगुलस्स संखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण२ (पञ्चेन्द्रियेषु मिथ्यादृष्टयोऽसंख्येया: श्रेणय: प्रतरासंख्येयभागप्रमिता:। स.सि. १, ८, प्रतिषु ‘संखेज्जदिभायपडिभाएण’ इति पाठ: ।) ।। ८२ ।।

तथा प्रतरांगुलके असंख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय और विकलेन्द्रिय अपर्याप्तोंके द्वारा जगत्प्रतरके पुन: पुन: अपहृत करने पर शलाकाओंके साथ जगत्प्रतर समाप्त होता है। तथा प्रतरांगुलके संख्यातवें भागको शलाकारूपसे स्थापित करके विकलेन्द्रिय

पर्याप्तकोंके द्वारा जगत्प्रतरके पुन: पुन: अपहृत करने पर शलाकाओंके साथ जगत्प्रतर समाप्त होता है, यह उक्त कथनका तात्पर्य है।

पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टि द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने है ? असंख्यात हैं ।।८०।।

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणीयोंके द्वारा अपहृत होता हैं ।।८१।।

इस सूत्रका अर्थ सुगम है, इसलिये नहीं कहते हैं।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंमें मिथ्यादृष्टियोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरू प प्रतिभागसे और सूच्यंगुलके संख्यातवें भागके वर्गरू प प्रतिभागसे जगत्प्रतर अपहृत होता है ।।८२।।

'जहा उद्देसो तहा णिद्देसो' त्ति णायादो अंगुलस्स असंखेज्जदिभागस्स वग्गो पंचिंदियाणं जगपदरस्स पडिभागो होदि । सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागस्स वग्गो जगपदरस्स पडिभागो होदि पंचिंदियपज्जत्ताणं। पडिभागो भागहारो त्ति एयट्ठो । विगलिंदियसुत्तेण सह पंचिंदियसुत्तं किमिदि ण वुत्तं ? ण एस दोसो, उवरिमगुणपडिवण्णसुत्तस्स पंचिंदियत्ताणुवट्ठावणट्ठत्तादो पुध पंचिंदियसुत्तं वुच्चदे । तत्थ ट्ठियपंचिंदियणिद्देसो किमिदि णाणुवट्ठाविज्जदे ? ण, एगजोगणिद्दिट्ठाणमेगदेसस्स अणुवट्टणाभावादो ।

संपहि उवरि वुच्चमाणअप्पाबहुगअणियोगद्दारसुत्तबलेण पुव्वाइरिओवएसबलेण च एदेण सुत्तेण सूचिदविगल-सयलिंदियाणमवहारकालविसेसे भणिस्सामो । तं जहा- आवलियाए असंखेज्जदिभाएण सूचिअंगुले भागे हिदे तत्थ जं लद्धं तं वग्गिदे वेइंदियाणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेइंदियअपज्जत्तअवहारकालो होदि । तं आवलियाए

'उद्देशके अनुसार निर्देश होता है' इस न्यायके अनुसार अंगुलके असंख्यातवें भागका वर्ग पंचेन्द्रिय जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगत्प्रतरका प्रतिभाग है और सूच्यंगुलके संख्यातवें

भागका वर्ग पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका प्रमाण लानेके लिये जगत्प्रतरका प्रतिभाग है । प्रतिभाग और भागहार ये दोनों एकार्थवाची शब्द हैं।

शंका -- विकलेंन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र क्यों नहीं कहा ?

समाधान -- यह कोई दोष नहीं है, क्योंकि, आगे कहे जानेवाले गुणप्रतिपन्न जीवोंके सूत्रमें पंचेन्द्रियत्वकी अनुवृत्ति करनेके लिये पृथक्रूपसे पंचेन्द्रियोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र कहा।

शंका -- विकलेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ पंचेन्द्रियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रकेएकत्र कर देने पर वहाँ स्थित पंचेन्द्रिय पदकेनिर्देशकी अनुवृत्ति क्यों नहीं होती है ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, एक योगरूपसे निर्दिष्ट अनेक पदोंमेसे एक देशकी अनुवृत्ति नहीं होती है। अब आगे कहे जानेवाले अल्पबहुत्व अनुयोगद्वारके सूत्रके बलसे और पूर्वाचार्योंके उपदेशके बलसे इस सूत्रके द्वारा सूचित विकलेन्द्रिय और सकलेन्द्रिय जीवोंके अवहारकाल विशेषोंको कहते हैं। वे इसप्रकार हैं- आवलीकेअसंख्यातवें भागसे सूच्यंगुलकेभाजित करने पर जो लब्ध आवे उसको वर्गित करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है। द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रियोंकेअवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है।

असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते तेइंदियअवहारकालो होदि । पुणो तम्हि चेव आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तं तम्हि चेव पक्खित्ते तेइंदियअपज्जत्ताणमवहारकालो होदि। एवं चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय-पंचिंदियअपज्जत्ताणं जहाकमेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदेयखंडेण अवहारकाला अब्भहिया कायव्वा। तदो पंचिंदियअपज्जत्तअवहारकाले आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो तेइंदियपज्जत्ताणं अवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे जं लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते वेइंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि। तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि चेव पक्खित्ते पंचिंदियपज्जत्ताणमवहारकालो होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे लद्धं तम्हि

चेव पक्खित्ते चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो होदि। एत्थ सव्वत्थ रासिविसेसेण रासिमोवट्टाविय लद्धं रूवूणं करिय भागहारभूद-आवलियाए असंखेज्जदिभागो उप्पाएदव्वो। एदेहि अवहारकालेहि पुध पुध जगपदरे भागे हिदे अप्पप्पणो दव्वपमाणाणि भवंति । एत्थ खंडिदादओ जाणिऊण वत्तव्वा।

इस द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय अपर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल होता है। पुन: इस त्रीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय जीवोंकेअवहारकालमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय अपर्याप्तकोंका अवहारकाल होता है। इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको क्रमसे आवलीसे असंख्यातवें भागसे खंडित करके उत्तरोत्तर एक एक भागसे अधिक करना चाहिये । अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे अधिक करना चाहिये। अनन्तर पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर प्रतरांगुलके संख्यातवें भागप्रमाण त्रीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालमें मिला देने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकेअवहारकालको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे उसी द्वीन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। इस पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके अवहारकालको आवलीकेअसंख्यातवें भागसे भाजित करने पर जो लब्ध आवे उसे इसी पंचेन्द्रिय पर्याप्त अवहारकालमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका अवहारकाल होता है। यहाँ सर्वत्र राशिविशेषसे राशिको अपवर्तित करकेजो लब्ध आवे उसमेंसे एक कम करकेभागहाररूप आवलीका असंख्यातवें भाग उत्पन्न कर लेना चाहिये। इन अवहारकालोंसे पृथक् पृथक् जगत्प्रतरकेभाजित करने पर अपने अपने द्रव्यका प्रमाण आता है। यहाँ पर खंडित आदिकका कथन समझ कर करना चाहिये ।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली ओघं१ (सासादनसम्यग्दृष्टयोऽयोगकेवल्यन्ताः सामान्योक्तसंख्याः । स.सि. १, ८.) ।। ८३ ।।

पहुडिसद्दो किरियाविसेसणं । सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि आइं करिय त्ति । एत्थ पुव्वसुत्तादो पंचिंदिय इदि अणुवट्टदे । तेण सव्वे गुणपडिवण्णा पंचिंदिया चेव । सजोगिअजोगिकेवलीणं पणट्ठासेसिंदियाणं पंचिंदियववएसो कधं घडदे ? ण, पंचिंदिय-जादिणामकम्मोदयमवेक्खिय तेसिं पंचिंदियववएसादो । एदेसिं पमाणपरूवणा मूलोघपरूवणाए तुल्ला । कुदो ? पंचिंदियवदिरित्तजादीसु गुणपडिवण्णाभावादो ।

पंचिंदियअपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया, असंखेज्जा ।। ८४।।

एदस्स सुत्तस्स सुगमो अत्थो ।

असंखेज्जासंखेज्जाहि ओसप्पिणि-उस्सप्पिणीहि अवहिरंति कालेण ।। ८५।।

एदस्स वि अत्थो सुगमो ।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानमें पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीव सामान्य प्ररूपणाके समान पल्योपमके असंख्यातवें भाग हैं ।।८३।।

यहाँ पर प्रभृति शब्द क्रियाविशेषण है जिससे सासादनसम्यग्दृष्टि प्रभृतिका अर्थ सासादनसम्यग्दृष्टिको आदि लेकर होता है। यहाँ पर पूर्व सूत्रसे पंचेन्द्रिय पदकी अनुवृत्ति होती है, इसलिये संपूर्ण गुणस्थानप्रतिपन्न जीव पंचेन्द्रिय ही होते हैं, यह अभिप्राय निकल आता है।

शंका -- सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके संपूर्ण इन्द्रियां नष्ट हो गई हैं, अतएव उनके पंचेन्द्रिय यह संज्ञा कैसे घटित होती है ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रियजाति नामकर्मकी अपेक्षा सयोगिकेवली और अयोगिकेवलियोंके पंचेन्द्रिय संज्ञा बन जाती है।

इन गुणस्थानप्रतिपन्न पंचेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणकी प्ररूपणा मूलोघ प्ररूपणाके समान है, क्योंकि, पंचेन्द्रियजातिको छोडकर दूसरी जातियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव नहीं पाये जाते हैं।

पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं? असंख्यात है ।। ८४।।

इस सूत्रका अर्थ सुगम है।

कालकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियोंकेद्वारा अपहृत होते हैं ।।८५।।

इस सूत्रका भी अर्थ सुगम है ।

खेत्तेण पंचिंदियअपज्जत्तएहि पदरमवहिरदि अंगुलस्स असंखेज्जदिभागवग्गपडिभाएण ।।८६।।

एदं पि सुत्तं सुगमं चेव । एदाणि तिण्णि वि सुत्ताणि पंचिंदियअपज्जत्तपडिबद्धाणि विगलिंदियापज्जत्तसुत्तं व पंचिंदियमिच्छाइट्ठिसुत्तम्हि चेव किण्ण वुत्ताणि त्ति वुत्ते ण, पंचिंदियअपज्जत्तेसु गुणपडिवण्णाभावपरूवणट्ठत्तादो पुध सुत्तारंभो । अपज्जत्तकाले वि पंचिंदिएसु गुणपडिवण्णा अत्थि वेउव्विय-ओरालियमिस्सकम्मइयकायजोगेसु सम्मत्त-णाण-दंसणोवलंभादो । इदि चे, होदु णाम णिव्वत्तिं पडि अपज्जत्तएसु ण पुण लद्धिअपज्जत्तएसु गुणपडिवण्णाणमत्थित्तं, अपज्जत्तणामकम्मोदएण सह गुणाणं अवट्ठाणविरोहा।

भागाभागं वत्तइस्सामो। सव्वजीवरासिं संखेज्जखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता होंति। सेसमसंखेज्जालोगमेत्तखंडे कए तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता होंति । सेसमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा बादरेइंदियअपज्जत्ता होंति ।

क्षेत्रकी अपेक्षा पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्वारा सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागके वर्गरूप प्रतिभागसे जगत्प्रतर अपहृत होता है ।।८६ ।।

यह सूत्र भी सुगम ही है । ये पूर्वोक्त तीनों भी सूत्र पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे प्रतिबद्ध हैं।

शंका -- जिसप्रकार विकलेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणका प्रतिपादक सूत्र स्वतन्त्र न होकर विकलेन्द्रिय और उनके पर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रके साथ ही निबद्ध है, उसीप्रकार पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टियोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंमें ही पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्र निबद्ध करके क्यों नहीं कहे?

समाधान -- ऐसा पूछने पर आचार्य कहते हैं कि नहीं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणके प्रतिपादक सूत्रोंका पृथक्रू पसे आरंभ पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंकेअभावकेप्ररूपण करनेकेलिये किया है ।

शंका -- अपर्याप्त कालमें भी पंचेन्द्रियोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीव होते हैं, क्योंकि, वैक्रियिकमिश्र, औदारिकमिश्र और कार्मणकाययोगमें सम्यग्दर्शन, ज्ञान तथा दर्शनकी उपलब्धि पाई जाती है ?

समाधान -- यदि ऐसा है तो निर्वृत्तिकी अपेक्षा अपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अस्तित्व रहा आवे, परंतु लब्ध्यपर्याप्तकोंमें गुणस्थानप्रतिपन्न जीवोंका अस्तित्व नहीं है, क्योंकि, अपर्याप्त नामकर्मके उदयके साथ सम्यग्दर्शन आदि गुणोंका सद्भाव माननेमें विरोध आता है।

अब भागाभागको बतलाते हैं- सर्व जीवराशिके संख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात लोकप्रमाण खंड करनेपर उनमेंसे बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके असंख्यात खंड करने पर

सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा बादरेइंदियपज्जता होंति। सेसमणंतखंडे कए बहुखंडा अणिंदिया होंति। सेसरासीदो पलिदोवमअसंखेज्जदिभागमवणेऊण१ (प्रतिषु 'पलिदोवमसंखेज्जदि-' इति पाठः।) सेसरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण खंडिदेगखंडं पि पुणो पुध ट्ठविय सेसबहुभागे घेत्तूण चत्तारि सरिसपुंजे काऊण ठवेयव्वा । पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण अवणिदएगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे पढमपुंजे पक्खित्ते वेइंदिया होंति। पुणो आवलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण दिण्णे सेसेगखंडं समखंडं करिय दाऊण तत्थ बहुभागे विदियपुंजे पक्खित्ते तेइंदिया होंति । पुव्वविरलणादो संपधियविरलणा किं सरिसा, किमधिया, किमूणा त्ति पुच्छिदे णत्थि एत्थ उवएसो। पुणो वि तप्पाओग्गमावलियाए असंखेज्जदिभागं विरलेऊण अवणिदएगखंडं समखंडं करिय दिण्णे तत्थ बहुखंडे तदियपुंजे पक्खित्ते चउरिंदिया होंति । सेसेगखंडं चउत्थपुंजे पक्खित्ते पंचिंदियमिच्छाइट्ठी होंति२ (गो.जी. १७८-१७९.) । वेइंदियरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुखंडा वेइंदियअपज्जत्ता होंति। सेसगखंडं तेसिं पज्जत्ता होंति । तेइंदिय-चउरिंदिय-पंचिंदियाणं पि एवं चेव

उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव हैं। शेष एक भागके अनन्त खंड करने पर

उनमेंसे बहुभागप्रमाण अनिन्द्रिय जीव हैं। शेष राशिमेंसे पल्योपमकेअसंख्यातवें भागको घटा कर जो राशि अवशिष्ट रहे उसमें आवलीकेअसंख्यातवें भागका भाग देने पर जो एक खंड लब्ध आवे उसे भी पुन: पृथक् स्थापित करकेशेष बहुभागको लेकर चार समान पुंज करकेस्थापित कर देना चाहिये । पुन: आवलीके असंख्यातवें भागके विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर निकाल कर पृथक् रखे हुए एक खंडको समान खंड करके देयरूपसे दे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागोंको प्रथम पुंजमें प्रक्षिप्त करने पर द्वीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है । पुन: आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर प्रथम पुंजमें देनेसे शेष रहे हुए एक भागको समान खंड करके देयरूपसे देनेके पश्चात् उनमेंसे बहुभागको दूसरे पुंजमें मिला देने पर त्रीन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है।

पूर्व विरलनसे इस समय किया गया दूसरा विरलन क्या समान है, क्या अधिक है, या क्या न्यून है? ऐसा पूछने पर आचार्य उत्तर देते हैं कि इसविषयमें उपदेश नहीं पाया जाता है। फिर भी तद्योग्य आवलीके असंख्यातवें भागको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके ऊपर पृथक् किये गये एक खंडको समान खंड करकेदेयरूपसे दे देनेकेअनन्तर उनमेंसे बहुभाग तीसरे पुंजमें मिला देने पर चतुरिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण होता है। शेष एक खंडको चौथे पुंजमें मिला देने पर पंचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि जीवोंका प्रमाण होता है। द्वीन्द्रिय जीवराशिकेअसंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीव हैं। त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रियोंका भी इसीप्रकार कथन करना चाहिये। पहले घटा कर

वत्तव्वं। पुव्वमवणिदपलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागरासिमसंखेज्जखंडे कए बहुभागा असंजदसम्माइट्ठी होंति । एवं णेयव्वं जाव अजोगिकेवलि त्ति। अहवा एइंदियाणं भागाभागो एवं वत्तव्वो । सव्वेइंदियरासी अद्धद्धेण छेत्तव्वो जाव बादरेइंदियरासी अवचिट्ठिदो त्ति । तत्थ लद्धअद्धच्छेदणयसलागा विरलेऊण विगं काऊण अण्णोण्णब्भासे कदे असंखेज्जलोगमेत्तरासी उप्पज्जदि । एदं रासिं विरलेऊण एक्केक्कस्स रूवस्स सव्वमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि बादरेइंदियाणं पमाणं पावेदि । तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदिया एयखंडं बादरेइंदिया । पुणो सुहुमेइंदियरासी अद्धद्धेण छिंदिदव्वो जाव सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी अवचिट्ठिदो त्ति । तत्थ अद्धद्धच्छेदणए विरलिय विगं करिय अण्णोण्णब्भासकरणेणुप्पण्णसंखेज्जरासिं विरलेऊण

एक्केक्कस्स रूवस्स सुहुमेइंदियरासिं समखंडं करिय दिण्णे रूवं पडि सुहुमेइंदियअपज्जत्तरासी पावुणदि । तत्थ बहुखंडा सुहुमेइंदियपज्जत्ता एयखंडं तेसिमपज्जत्ता होंति । एवं बादरेइंदियाणं पि वत्तव्वं । एत्थ संदिट्ठी । तं जहा- एइंदियरासी वेछप्पण्णसदमेत्तो २५६ । सुहुमेइंदियरासी चालीसब्भहियवेसयमेत्तो २४० । बादरेइंदियरासी सोलसमेत्तो १६ ।

पृथक् रक्खी हुई पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप राशिके असंख्यात खंड करने पर उनमेंसे बहुभागप्रमाण असंयतसम्यग्दृष्टि जीव हैं। इसीप्रकार अयोगिकेवलियोंके प्रमाण आने तक ले जाना चाहिये। अथवा, एकेन्द्रियोंके भागाभागको इसप्रकार भी कहना चाहिये- बादर एकेन्द्रिय राशि प्राप्त होने तक एकेन्द्रिय राशिको आधी आधी करते जाना चाहिये। इसप्रकार अर्धार्ध करनेसे जितनी अर्धच्छेद शलाकाएं प्राप्त होवें उनका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक अंकको दो रूप करके परस्पर गुणा करने पर असंख्यात लोकप्रमाण राशि उत्पन्न होती है। इस राशिको विरलित करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सर्व एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर प्रत्येक एकके प्रति बादर एकेंन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्राप्त होता है। वहाँ बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव और एक भागप्रमाण बादर एकेन्द्रिय जीव हैं। पुन: सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होने तक सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवराशिको अर्धार्धरूपसे छेदित करना चाहिये । ऐसा करनेसे वहाँ प्राप्त अर्धार्धच्छेदोंको विरलन करके और उस विरलित राशिके प्रत्येक एकको दो रूप करके परस्पर गुणा करनेसे जो असंख्यात राशि उत्पन्न होवे उसका विरलन करके और उस राशिके प्रत्येक एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय राशिको समान खंड करके देयरूपसे दे देने पर विरलित राशिके प्रत्येक एकके प्रति सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि प्राप्त होती है। वहाँ पर बहुभागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि है और एक भागप्रमाण सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि है। इसीप्रकार बादर एकेन्द्रियोंका भी कथन करना चाहिये। यहाँ पर संदृष्टि देते हैं। वह इसप्रकार है-

एकेन्द्रिय जीवराशि दो सौ छप्पन २५६ है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय रासी दोसौ चालीस २४० है । बादर एकेन्द्रिय राशि सोलह १६ है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि एकसौ अस्सी १८० है ।

सुहुमेइंदियपज्जत्तरासी असीदिसयमेत्तो १८० । तेसिमपज्जत्ता सट्ठी ६० हवंति । बादरेइंदियअपज्जत्ता वारस १२ हवंति । तेसिं पज्जत्ता चत्तारि ४ ।

संपहि वेइंदियपज्जत्तरासीदो वेइंदिय-तेइंदियरासीणं विसेसो किं सरिसो किमहिओ हीणो वा इदि वुत्ते असंखेज्जगुणो हवदि। तं जहा। वुच्चदे-तेइंदिय-चउरिंदियरासीणं विसेसादो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो असंखेज्जगुणो। तं कधं जाणिज्जदे ? आइरिओवदेसादो भागाभागम्हि परूविदवक्खाणादो य जाणिज्जदे। तेइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसो पुण तेइंदियपज्जत्तरासीदो बहुगो। तं कधं णव्वदे? तेइंदियअपज्जत्तरासीदो चउरिंदियरासी विसेसहीणो त्ति वुत्तं अप्पाबहुगसुत्तादो । तेइंदियपज्जत्तरासीदो पुण वेइंदियपज्जत्तरासी विसेसहीणो । तं कधं णव्वदे ? एदं पि अप्पाबहुगसुत्तादो चेव णव्वदे । तदो जाणिज्जदे जहा वीइंदियपज्जत्तरासीदो विसेसाहियतीइंदियपज्जत्तरासीदो बहुदरतीइंदिय-चउरिंदियरासिविसेसादो असंखेज्जगुणो वेइंदिय-तेइंदियरासिविसेसो वेइंदियपज्जत्तेहिंतो असंखेज्जगुणो त्ति ।

सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तराशि साठ ६० है । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त राशि बारह १२ है और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त राशि चार ४ है ।

अब द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशियोंका विशेष अर्थात् अन्तर क्या समान है, क्या अधिक है या हीन है? ऐसा पूछने पर द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है ऐसा समझना चाहिये। वह इसप्रकार है । आगे उसीको कहते हैं- त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय जीवराशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

शंका -- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान -- आचार्योके उपदेशसे और भागाभागमें प्ररूपण किये गये व्याख्यानसे जाना जाता है।

त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिके प्रमाणसे अधिक है ।

शंका -- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान -- त्रीन्द्रिय अपर्याप्त राशिके प्रमाणसे चतुरिन्द्रिय राशि विशेष हीन है ऐसा अल्पबहुत्व सूत्रकेअनुसार कहा गया है । कहा है--

त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशिकेप्रमाणसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिका प्रमाण विशेष हीन है।

शंका -- यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान -- यह भी अल्पबहुत्वके सूत्रसे ही जाना जाता है।

इसलिये जाना जाता है कि जिसप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त राशि विशेष अधिक है और इससे त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिका विशेष बड़ा है। त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय राशिके विशेषसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है उसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्त राशिसे द्वीन्द्रिय और त्रीन्द्रिय राशिका विशेष असंख्यातगुणा है।

छ. ४१

अप्पाबहुअं तिविहं सत्थाण-परत्थाण-सव्वपरत्थाणभेएण । एत्थ ताव सत्थाणप्पाबहुअं वुच्चदे । सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सगपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा सुहुमेइंदियअपज्जत्ता । तेसिं पज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जा समया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? सगअपज्जत्तपक्खित्तमेत्तेण । सव्वत्थोवो वेइंदियअवहारकालो । विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूई असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो । सो वि असंखेज्जाणि घणंगुलाणि सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? अवहारकालो । दव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? अवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं वेइंदियअपज्जत्ताणं पि सत्थाणं वत्तव्वं । एवं पज्जत्ताणं पि । णवरि जम्हि

स्वस्थान, परस्थान और सर्व परस्थानके भेदसे अल्पबहुत्व तीन प्रकारका है। उनमेंसे यहाँ पर पहले स्वस्थान अल्पबहुत्वको कहते हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव उनसे असंख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तोंसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक

हैं? अपनी पर्याप्त राशिको प्रक्षिप्त करने रूप विशेषसे अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव उनसे संख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तोंके प्रक्षिप्त करने पर जितना प्रमाण हो उतने अधिक हैं। द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। अवहारकालसे विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है । अथवा, जगत्श्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगत्श्रेणीके असंख्यात प्रथम वर्गमूलप्रमाण है । प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है । वह प्रतिभाग भी सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। विष्कंभसूचीसे जगत्श्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगत्श्रेणीसे द्वीन्द्रियोंका द्रव्यप्रमाण असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है । द्वीन्द्रियोंके द्रव्यसे जगत्प्रतर असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपना अवहारकाल गुणकार है । जगत्प्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? जगत्श्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका भी स्वस्थान अल्पबहुत्व कहना चाहिये । इसीप्रकार द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका भी कहना

सूचिअंगुलस्स असंखेज्जदिभागमेत्ताणि घणंगुलाणि त्ति वुत्तं तम्हि सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि त्ति वत्तव्वं। ति-चदु-पंचिंदियाणं तेसिं पज्जत्तापज्जत्ताणं पि जहाकमेण वेइंदिय-वेइंदियपज्जत्तापज्जत्ताणं भंगो । सासणादीणं मूलोघसत्थाणभंगो।

परत्थाणे पयदं । तत्थ ताव एइंदियपरत्थाणं वुच्चदे- सव्वत्थोवा बादरेइंदिया । सुहुमेइंदिया असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेदणा वि असंखेज्जा लोगा। एवं चेव विदियवियप्पो । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा। सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । तेसिं छेयणा वि असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । चउत्थो वियप्पो एवं चेव । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । संखेज्जसमया । चउत्थो वियप्पो एवं चेव ।

णवरि एइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियसहिदसुहुमेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण । सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा

चाहिये। इतना विशेष है कि जहाँ पर सूच्यंगुलके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहे हैं वहाँ पर सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र घनांगुल कहना चाहिये। त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय तथा इन्हींके पर्याप्त और अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वका कथन यथाक्रमसे द्वीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय पर्याप्त और द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान जानना चाहिये । इन्द्रियमार्गणामें सासादनसम्यग्दृष्टि आदिका स्वस्थान अल्पबहुत्व मूलोघ स्वस्थान अल्पबहुत्वके समान है।

अब परस्थानमें अल्पबहुत्व प्रकृत है। उनमेंसे पहले एकेन्द्रियोंके परस्थान अल्पबहुत्वका कथन करते हैं- बादर एकेन्द्रिय जीव सबसे स्तोक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव इनसे असंख्यातगुणा हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोक हैं । इसीप्रकार दूसरा विकल्प है । इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं । बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंसे असंख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । उनके अर्धच्छेद भी असंख्यात लोकप्रमाण हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंसे संख्यातगुणा हैं । गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है। चौथा विकल्प भी इसीप्रकार है। इतना विशेष है कि सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणमें बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणको मिला देने पर जो प्रमाण हो तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा हैं।

लोगा। बादरेइंदिया विसेसाहिया । को विसेसो ? पुव्वं भणिदो । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा। को

गुणगारो ? संखेज्जसमया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । को विसेसो ? पुव्वं भणिदो। छट्ठी वियप्पो एवं चेव । णवरि एइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? बादरेइंदियमेत्तेण । अहवा सव्वत्थोवा बादरेइंदियपज्जत्ता । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? असंखेज्जा लोगा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण । बादरेइंदियअपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । को गुणगारो ? संखेज्जसमया । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदियपज्जत्तमेत्तेण । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण? बादरेइंदियपज्जत्तविरहिदसुहुमेइंदियापज्जत्तमेत्तेण । एवं चेव अट्ठमो

गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। विशेषका प्रमाण कितना है ? पहले कहा जा चुका है अर्थात् बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका जितना प्रमाण है विशेषका प्रमाण उतना है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है ? संख्यात समय गुणकार है। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । विशेष क्या है ? पहले कहा जा चुका है, अर्थात् सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है उतना विशेष है। छठा विकल्प इसीप्रकार है। इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर एकेन्द्रियोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। अथवा, बादर एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सबसे स्तोक हैं। बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव इनसे असंख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या है? असंख्यात लोक गुणकार है । बादर एकेन्द्रिय जीव बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव बादर एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा हैं । गुणकार क्या है ? असंख्यात लोक गुणकार है । एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं? बादर एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषस अधिक हैं । सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा हैं। गुणकार क्या हैं? संख्यात समय

गुणकार है। एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका जितना प्रमाण हैं तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं । कितनेमात्र विशेषसे अधिक हैं ? बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके

वि वियप्पो । णवरि एइंदिया विवेसाहिया । सव्वत्थोवो वेइंदियअवहारकालो । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तेण । पज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? सगविक्खंभसूईए असंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? सगअवहारकालो । अहवा सेढीए असंखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सेढिपढमवग्गमूलाणि । को पडिभागो ? सगअवहारकालवग्गो असंखेज्जाणि घणंगुलाणि । केत्तियमेत्ताणि ? सूचिअंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्ताणि । वेइंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । वेइंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदमेत्तो । सेढी असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । वेइंदियपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ?

प्रमाणसे रहित सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्तकोंका जितना प्रमाण है तन्मात्र विशेषसे अधिक हैं। इसीप्रकार आठवां भी विकल्प है। इतना विशेष है कि एकेन्द्रिय जीव सूक्ष्म एकेन्द्रियोंके प्रमाणसे विशेष अधिक हैं। द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल सबसे स्तोक है। उन्हींके अपर्याप्त जीवोंका अवहारकाल पूर्वोक्त अवहारकालसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेषसे अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय जीवोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। उन्हीं द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची उन्हींके अवहारकालसे असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूचीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। प्रतिभाग क्या है ? अपना अवहारकाल प्रतिभाग है। अथवा, जगत्श्रेणीका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो जगत्श्रेणीके असंख्यात प्रथम

वर्गमूलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है ? अपने अवहारकालका वर्ग प्रतिभाग है जो असंख्यात घनांगुलप्रमाण है। असंख्यात घनांगुल कितने हैं ? सूच्यंगुलके संख्यातवें भागमात्र हैं । द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूची द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंकी विष्कंभसूचीसे विशेष अधिक है। उस विशेषका कितना प्रमाण है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रिय अपर्याप्तक जीवोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो एक भाग आवे तन्मात्र विशेष समझना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगत्श्रेणी असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तक जीवोंका द्रव्य जगत्श्रेणीसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी (द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंकी) विष्कंभसूची गुणकार है । उन्हीं द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय पर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ?

सगविक्खंभसूई। तस्सेव अपज्जत्तदव्वमसंखेज्जगुणं। को गुणगारो? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो । वेइंदियदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदसगअपज्जत्तमेत्तो । पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । एवं तीइंदियचउरिंदियाणं । एवं पंचिंदियाणं पि । णवरि अजोगिभगवंतमाइं काऊण वत्तव्वं।

सव्वपरत्थाणे पयदं । सव्वत्थोवमजोगिकेवलिदव्वं । चत्तारि उवसामगा संखेज्जगुणा । चत्तारि खवगा संखेज्जगुणा । सयोगिकेवलिदव्वं संखेज्जगुणं । अप्पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । पमत्तसंजददव्वं संखेज्जगुणं । असंजदसम्मादिट्ठिअवहारकालो असंखेज्जगुणो । उवरि पलिदोवमं त्ति ओघं । तदो वीइंदियअवहारकालो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सगअवहारकालस्स असंखेज्जदिभागो१ (अ-क प्रत्यो: 'असंखे०' इति पाठः ।)। को पडिभागो ? पलिदोवमं । अहवा पदरंगुलस्स संखेज्जदिभागो असंखेज्जाणि सूचिअंगुलाणि । को पडिभागो ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदपलिदोवमं । तस्सेव अपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ । केत्तियमेत्तो? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण

आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है । द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्य द्वीन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके द्रव्यसे विशेष अधिक है । कितनेमात्र विशेष अधिक है ? द्वीन्द्रिय अपर्याप्त

जीवोंके प्रमाणको आवलीके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है। जगत्प्रतर द्वींद्रिय जीवोंके द्रव्यसे असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है। जगत्प्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है ? जगत्श्रेणी गुणकार है । इसीप्रकार त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व है। तथा इसीप्रकार पंचेन्द्रिय जीवोंका भी परस्थान अल्पबहुत्व है। इतना विशेष है कि पंचेन्द्रिय जीवोंका परस्थान अल्पबहुत्व कहते समय अयोगी भगवान्को आदि करके उसका कथन करना चाहिये।

अब सर्वपरस्थान अल्पबहुत्वमें प्रकृत विषयको कहते हैं- अयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण सबसे स्तोक है। चारों गुणस्थानोंके उपशामक अयोगिकेवलियोंसे संख्यातगुणा हैं। चारों गुणस्थानोंके क्षपक उपशामकोंसे संख्यातगुणा हैं । सयोगिकेवलियोंका द्रव्यप्रमाण क्षपकोंसे संख्यातगुणा है। अप्रमत्तसंयतोंका प्रमाण सयोगियोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है। प्रमत्तसंयतोंका प्रमाण अप्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे संख्यातगुणा है । असंयतसम्यग्दृष्टियोंका अवहारकाल प्रमत्तसंयतोंके प्रमाणसे असंख्यातगुणा है। इसके ऊपर पल्योपम तक ओघके समान है। पल्योपमसे द्वीन्द्रियोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? अपने अवहारकालका असंख्यातवां भाग गुणकार है जो असंख्यात सूच्यंगुलप्रमाण है। प्रतिभाग क्या है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पल्योपमको गुणित करके जो लब्ध आवे उतना प्रतिभाग है। उन्हीं द्वीन्द्रियोंके अपर्याप्तक

खंडिदमेत्तो। एवं तेइंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-चउरिंदियअपज्जत्त-पंचिंदिय१ (प्रतिषु 'पंचिंदिय' इति पाठो नास्ति ।) -पंचिंदियअपज्जत्ताणं अवहारकालो जघाकमेण विसेसाहियो। तदो तीइंदियपज्जत्तअवहारकालो असंखेज्जगुणो। को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स संखेज्जदिभागो। वेइंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। केत्तियमेत्तो? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदतीइंदियपज्जत्तअवहारकालमेत्तो विसेसो। पंचिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाधियो। चउरिंदियपज्जत्तअवहारकालो विसेसाहिओ। तस्सेव विक्खंभसूई असंखेज्जगुणा। को गुणगारो? पुव्वं भणिदो। पंचिंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया। वेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिआ। तेइंदियपज्जत्तविक्खंभसूई विसेसाहिया । पंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूई असंखेज्जगुणा । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागस्स

संखेज्जदिभागो । पंचिंदियविक्खंभसूई विसेसाहिया । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तविक्खंभसूचिमेत्तेण ।

जीवोंका अवहारकाल द्वीन्द्रियोंके अवहारकालसे विशेष अधिक है। कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे द्वीन्द्रियोंके अवहारकालको खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है। इसीप्रकार त्रीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, पंचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीवोंके अवहारकाल भी यथाक्रम विशेष अधिक है। पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंके अवहारकालसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । कितनामात्र विशेष अधिक है ? आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंका अवहारकाल विशेष अधिक है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके अवहारकालसे उन्हींकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है? पहले कहा जा चुका है । चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। पंचेन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। त्रीन्द्रिय पर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूची असंख्यातगुणी है । गुणकार क्या है ? आवलीके असंख्यातवें भागका संख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीसे पंचेन्द्रियोंकी विष्कंभसूची विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्तकोंकी विष्कंभसूचीको खंडित करके जो भाग लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है। इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय

एवं णेयव्वं जाव चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-वेइंदियाणं विक्खंभसूईओ त्ति। सेढी असंखेज्जगुणा। को गुणगारो ? वीइंदियअवहारकालो ।

चउरिंदियपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? विक्खंभसूई । पंचिंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । वेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । तेइंदियपज्जत्तदव्वं विसेसाहियं । पंचिंदियअपज्जत्तदव्वं असंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? आवलियाए असंखेज्जदिभागो । पंचिंदियदव्वं विसेसाहियं । केत्तियमेत्तेण ? आवलियाए असंखेज्जदिभाएण खंडिदपंचिंदियअपज्जत्तदव्वमेत्तेण । एवं चउरिंदियअपज्जत्त-चउरिंदिय-तेइंदियअपज्जत्त-तेइंदिय-वेइंदियअपज्जत्त-वेइंदियाणं दव्वाणि जहाकमेण विसेसाहियाणि । तदो पदरमसंखेज्जगुणं । को गुणगारो ? वेइंदियअवहारकालो । लोगो असंखेज्जगुणो । को गुणगारो ? सेढी । अणिंदिया अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो सिद्धाणमसंखेज्जदिभागो । को पडिभागो ? लोगो । बादरेइंदियपज्जत्ता अणंतगुणा । को गुणगारो ? अभवसिद्धिएहि अणंतगुणो,

----

अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूची आनेतक ले जाना चाहिये । द्वीन्द्रिय जीवोंकी विष्कंभसूचीसे जगत्श्रेणी असंख्यातगुणी है। गुणकार क्या है ? द्वीन्द्रिय जीवोंकी अवहारकाल गुणकार है । जगत्श्रेणीसे चतुरिन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? अपनी विष्कंभसूची गुणकार है। चतुरिन्द्रिय पर्याप्तकोंके द्रव्यसे पंचेन्द्रिय पर्याप्त जीवोंका द्रव्य विशेष अधिक है । पंचेन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है। द्वीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्य विशेष अधिक है । त्रीन्द्रिय पर्याप्त द्रव्यसे पंचेद्रियोंका अपर्याप्त द्रव्य असंख्यातगुणा है । गुणकार क्या है ? आवलीका असंख्यातवां भाग गुणकार है। पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यसे पंचेन्द्रिय द्रव्य विशेष अधिक है। कितनेमात्र विशेषसे अधिक है? आवलीके असंख्यातवें भागसे पंचेन्द्रिय अपर्याप्त द्रव्यको खंडित करके जो लब्ध आवे तन्मात्र विशेषसे अधिक है । इसीप्रकार चतुरिन्द्रिय अपर्याप्त, चतुरिन्द्रिय, त्रीन्द्रिय अपर्याप्त, त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय अपर्याप्त और द्वीन्द्रिय जीवोंका द्रव्यप्रमाण यथाक्रमसे विशेष अधिक है । द्वीन्द्रिय द्रव्यप्रमाणसे जगत्प्रतर असंख्यातगुणा है। गुणकार क्या है? द्वीन्द्रिय जीवोंका अवहारकाल गुणकार है l जगत्प्रतरसे लोक असंख्यातगुणा है l गुणकार क्या है? जगत्श्रेणी गुणकार है । लोकसे अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण अनन्तगुणा है । गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्ध जीवोंसे अनन्तगुणा और सिद्धोंका असंख्यातवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? लोकका प्रमाण प्रतिभाग है। बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंका प्रमाण अनिन्द्रिय जीवोंके प्रमाणसे अनन्तगुणा है।

गुणकार क्या है ? अभव्यसिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, सिद्धोंसे भी अनन्तगुणा, जीवराशिके प्रथम वर्गमूलसे भी अनन्तगुणा और सर्व जीवराशिके असंख्यातवें भागका अनन्तवां भाग गुणकार है । प्रतिभाग क्या है ? अनिन्द्रिय जीवोंका प्रमाण प्रतिभाग है । बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकोंके प्रमाणसे उन्हींके अपर्याप्तक जीव असंख्यातगुणा हैं ।

सिद्धेहि वि अणंतगुणो जीववग्गमूलस्स वि अणंतगुणो सव्वजीवरासिस्स असंखेज्जदिभागस्स अणंतिमभागो । को पडिभागो ? अणिंदिया । तेसिमपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । बादरेइंदिया विसेसाहिया । सुहुमेइंदियअपज्जत्ता असंखेज्जगुणा । एइंदियअपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमेइंदियपज्जत्ता संखेज्जगुणा । एइंदियपज्जत्ता विसेसाहिया । सुहुमेइंदिया विसेसाहिया । एइंदिया विसेसाहिया ।

एवं इंदियमग्गणा समत्ता ।

कायाणुवादेण पुढविकाइया आउकाइया तेउकाइया वाउकाइया बादरपुढविकाइया बादरआउकाइया बादरतेउकाइया बादरवाउकाइया बादरवणप्फकाइया पत्तेयसरीरा तस्सेव अपज्जत्ता सुहुमपुढविकाइया सुहुमआउकाइया सुहुमतेउकाइया सुहुमवाउकाइया तस्सेव पज्जत्ता अपज्जत्ता दव्वपमाणेण केवडिया ? असंखेज्जा लोगा१ (कायानुवादेन पृथिवीकायिका अप्कायिकास्तेज:कायिका वायुकायिका असंख्येयलोका: । स.सि. १, ८. आउड्डरासिवारं लोगे अण्णोण्णसगुणे तेऊ । भू-जल-वाऊ अहिया पडिभागो असंखलोगो दु ।। गो.जी. २०४. अपदिट्ठिदपत्तेया असंखलोगप्पमाणया होंति । तत्तो पदिट्ठिदा पुण असंखलोगेण संगुणिदा ।। गो.जी. २०५. असंखया सेसा । पञ्चसं २, ९. पत्तेयपज्जवणकाइयाउ पयरं हरंति लोगस्स । अंगुलअसंखभागेण भाइय भूदगतणू य । आवलिवग्गो अन्तरावली य गुणिओ हु बायरा तेऊ। बाऊ य लोगसंखं सेसतिगमसंखिया लोगा ।। पञ्चसं २, १०-११, असंखिज्जा पुढवीकाइया जाव असंखिज्जा वाउकाइया । अनु.सू. १४१, पत्र १७९.
छ. ४२) ।। ८७ ।।

इनसे बादर एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यातगुणे हैं । इनसे एकेन्द्रिय अपर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव

संख्यातगुणा हैं । इनसे एकेन्द्रिय पर्याप्त जीव विशेष अधिक हैं । इनसे सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं । इनसे एकेन्द्रिय जीव विशेष अधिक हैं।

इसप्रकार इन्द्रियमार्गणा समाप्त हुई ।

कायानुवादसे पृथिवीकायिक, अप्कायिक, तेजस्कायिक, वायुकायिक जीव तथा बादर पृथिवीकायिक, बादर अप्कायिक, बादर तेजस्कायिक, बादर वायुकायिक, बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येकशरीर जीव तथा इन्हीं पांच बादरसंबन्धी अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथिवीकायिक, सूक्ष्म अप्कायिक, सूक्ष्म तेजस्कायिक, सूक्ष्म वायुकायिक जीव तथा इन्ही चार सूक्ष्मसंबन्धी पर्याप्त जीव और अपर्याप्त जीव, ये सब प्रत्येक द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा कितने हैं। असंख्यात लोकप्रमाण हैं ।। ८७।।

एत्थ पुढवी काओ सरीरं जेसिं ते पुढवीकाया त्ति ण वत्तव्वं, विग्गहगईए वट्टमाणाणं जीवाणमकाइत्तप्पसंगादो । पुणो कधं वुच्चदे ? पुढविकाइयणामकम्मोदयवंतो जीवा पुढविकाइया त्ति वुच्चंति । पुढविकाइयणामकम्मं ण कम्हि वि वुत्तमिदि चे ? ण, तस्स एइंदियजादिणामकम्मंतब्भूदत्तादो । एवं सदि कम्माणं संखाणियमो सुत्तसिद्धो ण घडदि त्ति वुत्ते वुच्चदे । ण सुत्ते कम्माणि अट्ठेव अट्ठेदालसयमेवेत्ति, संखंतरपडिसेहविधाययएवकाराभावादो । पुणो केत्तियाणि कम्माणि होंति ? हय-गय-विय-फुल्लंधुव-सलह-मक्कुणुद्देहि-गोम्हिंदगोवादीणि जेत्तियाणि कम्मफलाणि लोगे उवलब्भंते कम्माणि वि तत्तियाणि चेव। एवं सेसकाइयाणं पि वत्तव्वं। बादरणामकम्मोदयसहिदपुढविकाइयादओ बादरा । थूलसरीराणं जीवाणं बादरत्तं किण्ण वुच्चदे ? ण, बादरेगिंदियओगाहणादो सुहुमेइंदियओगाहणाए वेदणखेत्तविहाणादो

यहाँ पर पृथिवी है काय अर्थात् शरीर जिनके उन्हें पृथिवीकाय जीव कहते हैं, ऐसा नहीं कहना चाहिये, क्योंकि, पृथिवीकायका ऐसा अर्थ करने पर विग्रहगतिमें विद्यमान जीवोंके अकायित्वका अर्थात् पृथिवीकायित्वकेअभावका प्रसंग आ जाता है।

शंका -- तो फिर पृथिवीकायिकका अर्थ कैसा कहना चाहिये ?

समाधान -- पृथिवीकाय नामकर्मके उदयसे युक्त जीवोंको पृथिवीकायिक कहते हैं, इसप्रकार पृथिवीकायिक शब्दका अर्थ करना चाहिये।

शंका -- पृथिवीकायिक नामकर्म किसी भी सूत्रमें नहीं कहा गया है ?

समाधान -- नहीं, क्योंकि, पृथिवीकाय नामका कर्म एकेन्द्रिय जाति नामक नामकर्मके भीतर अन्तर्भूत है।

शंका -- यदि ऐसा है तो सूत्रसिद्ध कर्मोंकी संख्याका नियम नहीं रह सकता है ?

समाधान -- ऐसा प्रश्न करने पर आचार्य कहते हैं कि सूत्रमें कर्म आठ ही अथवा एकसौ अड़तालीस ही नहीं हैं, क्योंकि, आठ या एकसौ अडतालीस संख्याको छोडकर दूसरी संख्याओंका प्रतिषेध करनेवाला 'एव' ऐसा पद सूत्रमें नहीं पाया जाता है।

शंका -- तो फिर कर्म कितने हैं ?

समाधान -- लोकमें घोडा, हाथी, वृक (भेड़िया) भ्रमर, शलभ, मत्कुण उद्देहिका (दीमक), गोमी और इन्द्रगोप आदि रूपसे जितने कर्मोंकेफल पाये जाते हैं, कर्म भी उतने ही होते हैं।

इसीप्रकार शेष कायिक जीवोंके विषयमें भी कथन करना चाहिये। उनमें बादर नामकर्मके उदयसे युक्त पृथिवीकायिक आदि जीव बादर कहलाते हैं।

शंका -- स्थूल शरीरवाले जीवोंको क्यों नहीं कहा जाता है ?